महाभारत का एक पृष्ठ

(संकलित)

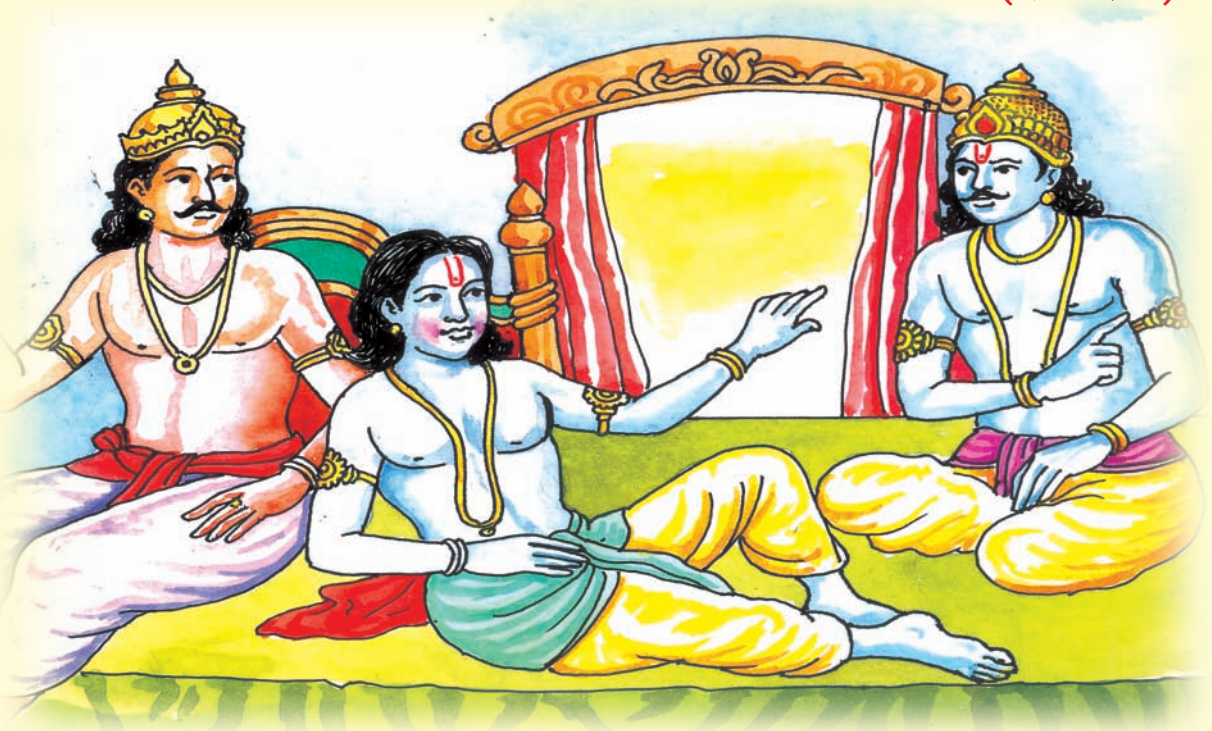

मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग किया है विचारों ने । जीवन में व्यवहार और विचार ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं । उन्नत विचार मनुष्य को ऊपर उठा देते हैं और निम्न विचार नीचे गिरा देते हैं । अतः व्यक्ति को व्यवहार में शिष्ट रहना चाहिए ।

महाभारत में एक कथा है । जब यह निश्चित हो गया कि पांडवों और कौरवों में सुलह नहीं हो सकती और युद्ध होकर ही रहेगा, तब दोनों पक्षों ने अपनी-अपनी सेना तैयार करनी शुरू कर दी । हर पक्ष चाहता था कि अधिक-से-अधिक देश के राजागण उसके पक्ष में हों । देश की बड़ी-बड़ी शक्तियाँ युद्ध की तैयारी करने लगीं । कौरव और पांडव दोनों चाहते थे कि श्रीकृष्ण उनके पक्ष में हों । उन दिनों भगवान कृष्ण द्वारिका के राजसिंहासन पर विराजमान थे ।

पांडवों की ओर से अर्जुन और कौरवों की ओर से दुर्योधन-दोनों श्रीकृष्ण से सहायता लेने के लिए उनके पास गए ।

यह संयोग था कि दोनों एक ही समय श्रीकृष्ण के पास पहुँचे । जब वे पहुँचे तब श्रीकृष्ण सो रहे थे ।

श्रीकृष्ण के पास पहले दुर्योधन पहुँचा । वह उनके सिर के पास बैठकर उनके जागने की प्रतीक्षा करने लगा ।

दुर्योधन के बाद अर्जुन पहुँचा । वह चुपचाप उनके पैरों की ओर बैठ गया ।

कुछ देर बाद श्रीकृष्ण की आँखें खुलीं । उन्होंने अपने पैरों की ओर सामने बैठे हुए अर्जुन को देखा । अर्जुन को देखते ही श्रीकृष्ण ने पूछा - ''कहो पार्थ ! कैसे आना हुआ ?'' और वे अर्जुन से बातें करने लगे ।

दुर्योधन उनके सिर की ओर बैठा हुआ था, अत: वे उसे नहीं देख पाए । इस पर दुर्योधन को क्रोध आ गया । किंतु उसने सोचा, कहीं ऐसा न हो श्रीकृष्ण युद्ध में अर्जुन को सहायता का वचन दे दें और मैं बैठा ही रह जाऊँ ! अत: वह अपना क्रोध दबाकर बोला- वासुदेव ! मैं अर्जुन से पहले आपके पास आया हूँ । अत: आप मेरी बात पहले सुनें ।

श्रीकृष्ण ने दुर्योधन की ओर देखते हुए कहा-कौरवराज ! आप मेरे पास पहले आए होंगे, पर मैंने सबसे पहले अर्जुन को देखा है । अत: इसकी बात पहले सुनना स्वाभाविक है ।

दुर्योधन के पास इसका कोई उत्तर नहीं था । भूल उसी की थी ।

अर्जुन और दुर्योधन दोनों एक ही कार्य के लिए श्रीकृष्ण के पास आए थे । दोनों चाहते थे कि कृष्ण युद्ध में उनकी ओर से लड़ें ।

पहले उन्होंने अर्जुन से पूछा, ''अर्जुन ! तुम किसलिए आए हो ?''

अर्जुन ने उत्तर दिया, ''पांडव चाहते हैं कि आप युद्ध में हमारी सहायता करें।''

तत्पश्चात् उन्होंने दुर्योधन से पूछा, ''कौरवराज ! अब आप बताएँ कि आप मेरे पास किस कार्य के लिए आए हैं ?''

दुर्योधन ने उत्तर दिया कि मैं भी आपके पास इसी कार्य के लिए आया हूँ।

कृष्ण ने उत्तर दिया, ''आप दोनों मेरे पास एक ही कार्य के लिए आए हैं। मैं दोनों को निराश नहीं करना चाहता । मेरा यह प्रस्ताव है कि इस युद्ध में मैं एक ओर रहूँगा और मेरी यादव सेना दूसरी ओर से युद्ध करेगी, अर्थात् एक तरफ मैं और दूसरी तरफ मेरी संपूर्ण वाहिनी । पर मैं युद्ध में शस्त्र नहीं उठाऊँगा । चुनने का अवसर मैं पहले अर्जुन को देता हूँ । पहले वह चुने कि इनमें से वह क्या चाहता है ?''

अर्जुन ने उत्तर दिया, ''मैं चाहता हूँ कि आप युद्ध में हमारी सहायता करें । इसकी हमें कोई चिंता नहीं कि आप युद्ध में शस्त्र उठाते हैं या नहीं ।''

दुर्योधन यह सुनकर मन में बड़ा प्रसन्न हुआ । उसने सोचा कि जो व्यक्ति युद्ध में शस्त्र ही नहीं उठाएगा उसे लेकर मैं क्या करूँगा । उसने अर्जुन के प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया ।

और विश्व जानता है कि दुर्योधन को यह खुशी बड़ी महँगी पड़ी। सारे युद्ध के केंद्र-बिंदु श्रीकृष्ण रहे । और जब-जब पांडवों पर विपत्ति पड़ी तो श्रीकृष्ण ने उन्हें उबारा । पांडवों को विजय-मुकुट पहनाने वाले श्रीकृष्ण ही थे ।

शब्दार्थ :

संयोग	-	मेल, अचानक मेल होना;
उन्नत	-	ऊँचे;
वासुदेव	-	वसुदेव का पुत्र, श्रीकृष्ण;
निम्न	-	नीचा, घटिया;
वाहिनी	-	सेना;
शिष्ट	-	सभ्य;
सहर्ष	-	प्रसन्नतापूर्वक;
पक्ष	-	लड़नेवालों में से एक दल, सेना, फौज;
विश्व	-	संसार;
मुक्ति	-	छुटकारा, मोक्ष;
विराजमान	-	विद्यमान, सुशोभित;
विजय मुकुट	-	विजय का ताज ।

अनुशीलनी

१. समझो और लिखो :

(i) मनुष्य को ऊपर उठाने वाले ओर नीचे गिराने वाले कौन से विचार हैं ?

(ii) व्यक्ति को व्यवहार में कैसा रहना चाहिए ?

(iii) श्रीकृष्ण के पास कौन-कौन सहायता लेने के लिए पहुँचे ?

(iv) महाभारत में क्या है ?

(v) अर्जुन को देखते ही श्रीकृष्ण ने उनसे क्या पूछा ?

(vi) अर्जुन और दुर्योधन श्रीकृष्ण के पास क्यों गए थे ?

(vii) पाण्डवों पर जब-जब आपत्ति पड़ी किसने उन्हें मुसीवत से मुक्ति दिलाई ?

२. भाषावोध :

निम्नलिखित शब्दों के आधार पर वाक्यों में दिए गए शून्यस्थानों की पूर्ति करो :

(व्यवहार, कथा, दुर्योधन, श्रीकृष्ण)

(i) जीवन में -------- और विचार ही सब से अधिक महत्त्वपूर्ण है।

(ii) महाभारत में एक -------- है ।

(iii) -------- उनके सिर की ओर बैठा था ।

(iv) सारे युद्ध के केन्द्रविन्दु -------- रहे ।

समझो और शब्दों के जोड़े बनाओ :

हाड़ - मांस :

दाल :

हाथ :

नहाना :

सिर :

पति :

३. ईय प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाओ :

भारत - भारतीय

जाति -

मानव -

क्षेत्र -

४. इस पाठ से कम-से-कम १० सर्वनाम चुनो ।